ISSN – 2277-7911
Impact Factor – 5.519
YOUNG RESEARCHER
A Multidisciplinary Peer-Reviewed Refereed Research Journal
Jan-Feb-Mar 2024
Vol. 13 No. 1

छायावादी काव्य में प्रकृति-संवेदना एवं सौंदर्य-बोध

डॉ. सोमनाथ वांजरवाडे

सहयोगी प्राध्यापक,

विवेकानंद महाविद्यालय, छत्रपति संभाजीनगर

Corresponding Author: *डॉ. सोमनाथ वांजरवाडे*

DOI - 10.5281/zenodo.22641367

अनादि काल से प्रकृति मनुष्य की सहचरी रही है। भारतीय साहित्य, समाज और सांस्कृतिक चिंतन की परंपरा में प्रकृति का महत्वपूर्ण स्थान रहा है। छायावादी काव्य आधुनिक हिंदी कविता का सर्वोच्च प्रकृति काव्य है। छायावादी कवियों ने पाश्चात्य साहित्य और उससे प्रभावित बंगला साहित्य से प्रभाव ग्रहण करते हुए आधुनिक काल में प्रकृति-चित्रण को नई दिशा प्रदान की है। आज आधुनिक मानव प्रकृति की ओर मुड़ने लगा है। नामवर सिंह का यह कथन इसका प्रमाण है, "विज्ञान के द्वारा प्रकृति से संघर्ष करते हुए भी आधुनिक मानव ने उससे प्रेम किया। जिस प्रकृति से संघर्ष उसी से प्रेम यह आधुनिक युग का ही सत्य नहीं है बल्कि मानव जाति के समूचे इतिहास का यही निष्कर्ष है।"[1] अर्थात् आधुनिक युग में मनुष्य ने प्रकृति के साथ संघर्ष करते हुए प्रकृति के साथ हृदयपूर्ण संबंध जोड़ा है। छायावादी कवियों का प्रकृति की ओर मुड़ना, प्रकृति को महत्व देना तथा प्रकृति की स्वतंत्र सत्ता को कविताओं में प्रतिष्ठित करना यह आधुनिक विज्ञानवादी सोच की मानसिकता का परिणाम है। छायावादी कवियों ने प्रकृति को काव्य में अनेक रूपों में ग्रहण किया है। छायावादी कवियों ने प्रकृति का मानवीकरण बहुत ही प्रभावी एवं सुंदरता से किया है। उनका प्रकृति-चित्रण बहुआयामी है, जिसका सविस्तर वर्णन निम्नलिखित रूप में प्रस्तुत किया गया है।

आलंबन रूप में प्रकृति-चित्रण:

आलंबन रूप में प्रकृति का वर्णन छायावादी काव्य में अनेक स्थानों पर हुआ है। आलंबन रूप में प्रकृति का वर्णन साधन रूप में नहीं बल्कि साध्य रूप में किया जाता है। कवि प्रकृति में किसी प्रकार की भावना का अध्याहार न करके उसका यथातथ्य वर्णन करता है तो वह आलंबनगत विशुद्ध प्रकृति-चित्रण कहलाता है। छायावादी कवि प्राकृतिक सौंदर्य पर रीझते हैं, उसमें वे तल्लीनता का अनुभव महसूस करते हैं और हृदय की मुक्तावस्था को प्राप्त करते हैं। सुमित्रानंदन पंत प्रकृति-सौंदर्य के अमर गायक हैं। उनके काव्य-सृजन की प्रेरणा ही प्रकृति है। आलंबन रूप में प्रकृति का चित्रण करते हुए पंत ने प्राकृतिक पदार्थों के नामों की परिगणना की है। उनके द्वारा लिखित 'ग्राम्या' और 'ग्रामश्री' नामक कविताओं में प्रकृति के आलंबन रूप का उद्घाटन हुआ है—

"लहलह पालक, महमह धनियाँ
लौकी औ, सेम फली फैली।
मखमली टमाटर हुए लाल,
मिर्चों की बड़ी हरी थैली।"[2]

जयशंकर प्रसाद के 'कामायनी', 'चित्राधार', 'कानन-कुसुम', 'करुणालय', 'प्रेम पथिक', 'महाराणा का महत्व', 'झरना' और 'लहर' में प्रकृति के आलंबन रूप का बड़े प्रभावशाली रूप में वर्णन प्रस्तुत हुआ है। 'कामायनी' में प्रकृति का आलंबन रूप में वर्णन करते हुए प्रसाद लिखते हैं—

"हिम-गिरि के उत्तुंग शिखर पर बैठ शिला की
शीतल छाँह।
एक पुरुष, भीगे नयनों से, देख रहा था प्रलय प्रवाह।
नीचे जल था, ऊपर हिम था, एक तरल था, एक
सघन।
एक तत्व की ही माया थी, कहो उसे जड़ या
चेतन।"[3]

निराला मूलतः प्रकृति-प्रदत्त कवि हैं। उनके काव्य में प्रकृति-चित्रण कई प्रकार से हुआ है। उन्होंने अपनी कविताओं में प्रकृति का शुद्ध एवं भावात्मक सौंदर्य चित्रित किया है। निराला को फूलों के प्रति विशेष प्रेम और आकर्षण रहा है। उनकी अनेक कविताओं में प्रसंगानुकूल फूलों के सौंदर्य का वर्णन हमें दिखाई देता है। जूही, बेला, चमेली, नर्गिस, शेफालिका उनके प्रिय फूल रहे हैं। आलंबन रूप में प्रकृति का चित्रण प्रस्तुत करते हुए निराला ने अनेक प्राकृतिक फूलों के नाम गिनाए हैं—

"बेला, गुलशब्बो, चमेली, कामिनी,
जूही, नर्गिस, रातरानी, कमलिनी,
चंपा, गुलमेहँदी, गुलखैरू गुलअब्बास,
गेंदा, गुलदाऊदी, निवाड़ी, गंधराज,
और कितने फूल, फुहारें कई,
रंग अनेकौं—सुर्ख, धानी, चंपई,
आसमानी, सब्ज, फिरोजी सफेद,
जर्द, बादामी, बसंती, सभी भेद।"[4]

महादेवी वर्मा ने प्रकृति को शुद्ध आलंबन रूप में कम ही चित्रित किया है। उनके अधिकांश प्रकृति-चित्रण उनके अपने भावों के ही प्रतिबिंब हैं। उनके कवि-हृदय ने प्रकृति के अनेक सौंदर्य-उपादानों का मनोहारी चित्रण आलंबन रूप में प्रस्तुत किया है। उन्होंने हिमालय का चित्र मनोरम कल्पना से और रूप-रंग की सुंदर संगति से साकार किया है—

"हे चिर महान!
यह स्वर्ण-रश्मि छू श्वेत भाल,
बरसाती रंगीन हास,
सेली बनता है इंद्रधनुष,
परिमल मल-मल जाता बतास।
पर रागहीन तू हिम-निधान।"[5]

प्रस्तुत वर्णन महादेवी की वर्णन-पटुता का प्रमाण है। इस वर्णन में बिंब ग्रहण शैली का प्रयोग हुआ है।

मानवीकरण रूप में प्रकृति-चित्रण:

प्रकृति का मानवीकरण छायावादी काव्य की प्रधान विशेषता है। "मानवीकरण प्रकृति-चित्रण की वह विधा है जिसमें प्रकृति को सप्राण मानकर मानव व्यापारों तथा भावनाओं को देखने की प्रवृत्ति होती है।"[6] मानवीकरण के कारण प्रकृति सचेतन प्राणी के रूप में चित्रित होती है। सचेतन प्राणी के रूप में प्रकृति विभिन्न क्रियाएँ करती हुई दिखाई देती है। छायावादी कवियों ने प्रकृति के मानवीकरण रूप का सर्वाधिक वर्णन किया है।

सुमित्रानंदन पंत ने 'बादल', 'छाया', 'मधुकरी', 'निर्झरी', 'संध्या', 'नौकाविहार', 'जुगनू' और 'चाँदनी' आदि कविताओं में प्रकृति को मानवीय भावनाओं, चेष्टाओं तथा व्यापारों से

ओतप्रोत करके सचेतन की तरह अभिव्यक्त किया है। उनकी 'संध्या' कविता में मानवीकरण का सजीव चित्रण प्रस्तुत हुआ है—

"कौन तुम रूपसि, कौन व्योम से उतर रही चुपचाप
छिपी निज छाया छवि में अपार, सुनहला फैला केश कलाप।
मधुर, मंथर, मृदु मौन!
मूँद अधरों में मधुरालाप, पलक में निमिष, पदों के चाप,
भाव संकुल, वक्रिम, भ्रूचाप, मौन केवल तुम मौन।"[7]

प्रसाद के 'चित्राधार' काव्य-संकलन में प्रकृति संबंधी अनेक कविताएँ संकलित हैं जिनमें नए-नए रंगों के दर्शन होते हैं। प्रकृति का मानवीकरण के रूप में चित्रण करते हुए प्रसाद ने नारी-सौंदर्य का सूक्ष्म चित्रण प्रस्तुत किया है—

"इत चातक चित लाई लखत है तेरे मुख को।
मधुर वारि शीतल की आशा धोर सुख को।।
क्यों इतनों तरसावत हौ निज प्रेमीजन को।
स्वाति लौं पिअताई देहुगे जल सुखमन को।। "[8]

महादेवी वर्मा ने प्रकृति का चित्रण अनेक रूपों में किया है। उनके अनेक गीत मानवीकरण की आभा से दीप्त हैं। उन्हें मानवीय भावनाओं और व्यापारों से परिपूर्ण प्रकृति दिखाई देती है। महादेवी ने मानवीयकृत प्रकृति में कहीं प्रणय-व्यापार चलाया है तो कहीं वह अभिसारिका-नायिका तो कहीं प्रेयसी और अवगुंठनवती नायिका बनती है। प्रिय का संदेश लेकर जाती हुई दूतिका तो कभी शिक्षिका के रूप में सामने आती है। महादेवी मानवीकरण के रूप में प्रकृति का मनमोहक दृश्य चित्रित करते हुए लिखती हैं—

"सजगार कर ले री सजनि!
हिम-स्नात कलियों पर जगा ये
जुगनुओं ने दीप से
ले मधुपराग समीर ने वन-पथ दिए हैं लेप से
गाती मुकुल के कक्ष में
मधुगीत मतवाली अलिनि।"[9]

निराला के लिए प्रकृति ब्रह्म है, शक्ति है। उन्होंने अन्य छायावादी कवियों की तरह प्रकृति का मानवीकरण के आधार पर चित्रण किया है। कवि के लिए प्रकृति सजीव तथा सप्राण है। 'जूही की कली' में निराला ने जूही की कली को नायिका और मलयानिल को नायक के रूप में चित्रित किया है। निराला ने निद्रामग्न नायिका के रूप में जूही की कली का प्रकृति के माध्यम से मानवीकरण के आधार पर सुंदर चित्रण किया है—

"विजन-वन-वल्लरी पर
सोती थी सुहाग-भरी-स्नेह-स्वप्न-मग्न अमल
कोमल-तन-तरुणी
जूही की कली।"[10]

छायावादी कवियों ने प्रकृति को सचेतन सत्ता माना है और उसका मानवीकरण करके उसी के माध्यम से अपने भावों को अभिव्यक्त किया है।

उद्दीपन रूप में प्रकृति-चित्रण:

प्रकृति का सौंदर्य अनेक रूप में मानव को उद्दीप्त करता है। विशेषकर प्रेमियों के साहचर्य और वियोग में उन्हें प्रकृति विशेष रूप से उद्दीप्त करती है। प्रकृति का उद्दीपन रूप छायावादी काव्य की प्रधान विशेषता है। छायावादी कवियों ने अपनी कविताओं में मानवीय भावों को उद्दीप्त करने के लिए अनेक स्थानों पर प्रकृति का उपयोग किया है। प्रकृति यहाँ

मानव की सुख-दुःखात्मक अनुभूतियों को उद्दीप्त करती दिखाई देती है।

कवि निराला को वियोग अवस्था में प्रकृति वियोगिनी के रूप में दिखाई देती है। वर्षा ऋतु का सौंदर्यमय वातावरण भी वियोगिनी को पीड़ित करता है। अपने प्रिय की अनुपस्थिति में वह चिंतित एवं व्याकुल दिखाई देती है। 'घन आए, घनश्याम न आए' कविता में निराला ने प्रकृति के उद्दीपन रूप का वर्णन करते हुए लिखा है—

"घन आए, घनश्याम न आए।
जल बरसे आँसू दृग छाए।
पड़े हिंडोले, धड़क आया,
बढ़ी पेंग, घबराई काया,
चले गले, गहराई छाया,
पायल बजे, होश मुरझाए।"[11]

जयशंकर प्रसाद की कविताओं में प्रकृति के उद्दीपन रूप का सुंदर वर्णन प्रस्तुत हुआ है। उन्होंने उद्दीपन रूप में प्रकृति का महत्व स्वीकार किया है। कोकिल का गान, मधुर सुरभि और शीतल चंद्रिका, स्वस्थ मन को उत्तेजित करते हैं। वह उस उन्मुक्तता का समस्त प्रकृति में अनुभव करते हैं। यौवन के आगमन से प्रभावित मन को समस्त प्रकृति में जिस मानसिकता की अनुभूति होती है उसका वर्णन करते हुए प्रसाद लिखते हैं—

"क्या तुम्हें देखकर आती यौवन
मतवाली कोयल बोली थी;
उस नीरवता में अलसाई,
कलियों ने आँखें खोली थीं।"[12]

प्रकृति के उद्दीपन रूप की अभिव्यक्ति परंपरा प्राचीन है। महादेवी वर्मा की कविताओं में भी उद्दीपन का रूप दृष्टिगोचर होता है। उनके उद्दीपन चित्रों में अपनी मौलिक विशेषता है। प्रकृति उनके हृदय-भावों को उद्दीप्त एवं भावेषित करती प्रतीत होती है। कोकिल को संबोधित करते हुए प्रकृति कवयित्री की भावनाओं के तार छेड़ रही है—

"कोकिल गा रे ऐसा राग मधु की चिर प्रिया यह राग
उठता मचल सिंधु अतीत लेकर सुप्त सुधि का ज्वार,
मेरे रोम-रोम में सुकुमार उठते विश्व के दुःख जाग।"[13]

अतः महादेवी की प्रकृति उनके व्यक्तित्व से एकाकार हो गई है। प्रकृति से किया गया तादात्म्य उनके अनेक गीतों में उद्दीप्त हुआ है। 'प्रिय साँध्यगगन मेरा जीवन गीत' में यही तादात्म्य भाव उद्दीप्त हुआ है।

सुमित्रानंदन पंत के काव्य में प्रकृति के उद्दीपन रूप का चित्रण अनेक स्थानों पर हुआ है। संयोग की अनुभूति में कवि का मन प्राण चंचल हो उठता है। लेकिन वियोग के क्षणों में यही प्रकृति वेदना को उद्दीप्त कर पीड़ा को और अधिक व्यथित एवं व्याकुल बना देती है। 'ग्रंथि', 'उच्छवास', 'परिवर्तन' तथा 'आँसू' आदि कविताओं में कवि ने वियोग के क्षणों को चित्रित किया है—

"विरह है अथवा यह वरदान
कल्पना में है सिसकती वेदना,
अश्रु में जीता, सिसकता गान है,
शून्य आहों में सुरीले छंद हैं,
मधुर, लय का क्या कहूँ अवसान है।"[14]

प्रकृति के बहाने पंत ने अपनी वैयक्तिक वेदना को व्यक्त करने का प्रयास किया है।

उपदेशात्मक रूप में प्रकृति-चित्रण:

भारतीय साहित्य को प्रकृति ने हमेशा उद्बोधित किया है। प्रकृति खामोशी से कुछ-न-कुछ बताती रहती है, जिससे संवेदनशील मानव नयी-नयी बातें सीखता है। पाश्चात्य साहित्य में भी यह प्रकृति-

शैली कीट्स और वर्ड्सवर्थ आदि कवियों में मिलती है।

निराला को प्रकृति में उपदेशात्मकता का दर्शन होता है। प्रकृति निराला को प्रेरित व कर्तव्य-पथ पर अग्रसर करती हुई जान पड़ती है तथा वे प्रकृति को एक अनुभव-शक्ति भी समझते हैं। 'वन-बेला' में प्रकृति का उपदेशात्मक रूप कवि को प्रेरणा देता है—

"फिर उषःकाल
मैं गया टहलता हुआ, बेल की झुकी डाल
तोड़ती फूल कोई ब्राह्मण,
'जाती हूँ मैं' बोली बेला,
'जीवन प्रिय के चरणों पर करने को अर्पण'
देखती रही।
निष्कल प्रभात की वायु बही।"[15]

उपर्युक्त काव्य-पंक्तियों में बेला की डाल का झुकना 'विनम्रता', प्रिय के चरणों पर अपने जीवन को अर्पण करना त्याग का द्योतक है। अतः प्रकृति हमें यह उपदेश करती है कि 'विनम्रता' और 'त्याग' मानवीय व्यक्तित्व को उज्ज्वल करती हैं।

महादेवी वर्मा के काव्य में उपदेशात्मक रूप देखने को मिलता है। महादेवी की सजीव प्रकृति भी ऐसे ही व्यापारों से संपन्न है, जिसमें मनुष्य का भावुक हृदय उपदेश ग्रहण करता है। कवयित्री फूल से प्रेरणा ग्रहण करते हुए अपनी भावनाओं को व्यक्त करती हैं—

"न रहता भौरों का आह्वान
नहीं रहता फूलों का राज
कोकिला होती अंतर्धान
चला जाता प्यारा ऋतुराज
असंभव है चिर सम्मेलन
न भूलो क्षण-भंगुर जीवन।"[16]

अर्थात् जगत में कुछ भी शाश्वत नहीं है। झड़ते हुए फूल, बसंत का ह्रास, भौरों की गुंजार, कोकिला-प्रवास यही संदेश देते हैं कि संसार परिवर्तनशील और क्षणभंगुर है।

सुमित्रानंदन पंत के लिए प्रकृति एक शिक्षिका के रूप में प्रस्तुत होती है। कवि ने बसंत को पतझड़ में, सुंदर प्रभात को संध्या में और चाँदनी को अंधकार में परिणत होते बताकर जीवन और जगत की अस्थिरता एवं क्षणभंगुरता का उपदेश दिया है। प्रकृति की दिव्य शिक्षण-शक्ति से चमत्कृत होकर पंत संगीत शिक्षा के लिए मधुप-कलिका से प्रार्थना करते हुए लिखते हैं—

"सिखा दो न हे मधुप कुमारी!
मुझे भी अपने मीठे गान,
कुसुम के चुने कटोरों से,
करा दो न, कुछ-कुछ मधुपान।"[17]

रहस्यात्मक रूप में प्रकृति-चित्रण:

छायावादी काव्य में रहस्यभावना प्रधान रही है। प्रकृति में रहस्य-दर्शन की परंपरा प्राचीन है और छायावादी कवियों ने भी इसका प्रचुर मात्रा में प्रयोग किया है। वैदिक काल से ही मनुष्य ने प्रकृति में परम तत्व का अन्वेषण किया है। भक्तिकाल में मलिक मोहम्मद जायसी ने प्रकृति के माध्यम से रहस्य भावना को व्यक्त किया। छायावादी कवियों ने भी अपनी कविताओं में प्रकृति का चित्रण करते हुए जिज्ञासा एवं कौतूहल-संपन्न रहस्य भावना को अभिव्यक्त किया है।

कवि सुमित्रानंदन पंत दृश्यमान जगत का वर्णन करते हुए उस अदृश्य सत्ता को प्रकृति में देखते हैं। पंत की 'मौन निमंत्रण' कविता इस दृष्टि से उल्लेखनीय है। इस कविता में कवि को सर्वत्र उस

अज्ञात सत्ता के मौन निमंत्रण का आभास होता है, जो उन्हें अज्ञात सत्ता की ओर अनायास ही पुकार रही है—

"देख वसुधा का यौवन भार
गूँज उठता है तब मधुमास
विधुर उर के से मृदु उद्गार
कुसुम जब खुल पड़ते सोचवास
न जाने, सौरभ के मिस कौन
संदेश मुझे भेजता मौन।"[18]

बसंत ऋतु में पुष्पों का खिलना और उससे निकलने वाली सुगंध के द्वारा कवि को अज्ञात सत्ता अपनी ओर आने के लिए संदेश देती है।

महादेवी वर्मा ने प्रकृति के कोमल, मधुर और सुंदर रूप का चित्रण अधिक मात्रा में किया है। प्रकृति उनके लिए एक अज्ञात रहस्यमय प्रियतम है। 'मुस्कुराता संकेत भरा नभ' उनके लिए प्रिय के आने का संकेत है। कवयित्री रहस्य की साधिका है। उन्होंने अपने अज्ञात प्रियतम का दर्शन एवं मिलन प्रकृति के बीच ही किया है। वे लिखती हैं—

"करुणामय को भाता है
तम के परदों में आना,
हे नभ की दीपावलियों!
तुम पल भर के लिए बुझ जाना।"[19]

महादेवी वर्मा स्वयं को उस अज्ञेय, असीम प्रियतम की प्रेमिका मानती हैं। वह प्रकृति के प्रत्येक उपकरण एवं उपादानों में इसी सत्ता का साक्षात्कार करती हैं।

निराला ने रहस्यात्मक रूप में प्रकृति का वर्णन किया है। उन्हें महसूस होता है कि ऋतु-परिवर्तन की क्रिया-कलापों के पीछे कोई अज्ञात शक्ति है जो इन्हें संचालित करती है। इसी अज्ञात शक्ति को देखने, समझने तथा पहचानने की अभिलाषा एवं जिज्ञासा छायावादी कवियों में देखने को मिलती है। 'धारा' कविता में निराला ने आत्मा एवं परमात्मा के मिलन की उत्कटता को कुछ इस प्रकार अभिव्यक्त किया है—

"उसी तरह हँसती पागल-सी बहती
यह जीवन की प्रबल उमंग,
जा रही मैं मिलने के लिए,
पार कर सीमा,
प्रियतम असीम के संग।"[20]

कवि निराला प्रकृति को संचालित करने वाली अज्ञात सत्ता के रहस्य पर विश्वास करते हैं। प्रस्तुत पंक्तियों में उन्होंने नदी की धारा को आत्मा और सागर को परमात्मा का रूप प्रदान करके सांकेतिकता में प्रकृति-रहस्य को उद्घाटित किया है।

संक्षेप में छायावादी कवि अनुभव करते हैं कि प्रकृति में किसी असीम सत्ता का आशीर्वाद व्याप्त है, जो भय, बाधा और वाद-विवाद से मुक्त सर्वत्र आनंद, उल्लास का वातावरण निर्माण करता है।

प्रतीकात्मक एवं अलंकारिक रूप में प्रकृति-चित्रण:

प्राकृतिक प्रतीक एवं अलंकारों का प्राचुर्य छायावादी काव्य की महत्वपूर्ण विशेषता है। जिस प्रकार प्रकृति छायावादी कवियों के लिए सौंदर्यानुभूति का स्रोत बनी ठीक उसी प्रकार वह प्रतीक और अलंकार का भी उपादान होकर आयी है। छायावादी कवियों ने भावों की कुशल अभिव्यक्ति के लिए विविध प्राकृतिक उपकरणों का उपमान एवं प्रतीक रूप में वर्णन प्रस्तुत किया है। छायावाद में प्रतीकों का प्रयोग शैलीगत और विषय-वस्तु के रूप में प्रयुक्त हुआ है।

महादेवी वर्मा ने प्रतीकों का प्रयोग अपने जीवन की अभिव्यक्ति, दार्शनिक विचारों की अभिव्यंजना, सामाजिक एवं राष्ट्रीय भावनाओं और वैयक्तिक प्रेम तथा सौंदर्य भावना को विविध रूपों में व्यक्त करने के उद्देश्य से किया है। कवयित्री ने जीवन की व्यथा, करुणा, पीड़ा और हर्ष आदि भावनाओं को प्रतीक रूप में व्यक्त किया है। महादेवी ने संसार की अस्थिरता को 'टूट गया वह दर्पण निर्मम'[21] कहकर दर्पण को जगत का प्रतीक बताया है। वह समाज की दुखी एवं उपेक्षित नारियों का प्रतीकात्मक रूप में चित्रण प्रस्तुत करते हुए लिखती हैं—

"मेरे गीले पलक छुओ मत
मुरझाई कलियाँ देखो।"[22]

प्रस्तुत पंक्तियों में मुरझाई कलियाँ उपेक्षित, शोषित और पीड़ित भारतीय नारी का प्रतीक हैं।

निराला ने प्रस्तुत-अप्रस्तुत क्रियाओं, वस्तुओं और भावनाओं के लिए प्रकृति से प्रतीक ग्रहण किए हैं। उनकी प्रतीकात्मकता में पारंपरिकता के साथ नवीनता भी मौजूद है—

"मेरा पतझड़-हरा हृदय हर
पत्तों के मर्मर के सुखकर
तुम्हीं सुनाती हो नूतन स्वर
भर देती हो प्राण।"[23]

प्रस्तुत पंक्तियों में 'पतझड़' निराशा की भावना, 'पत्तों का मर्मर' आशा तथा 'नूतन स्वर' प्रोत्साहन की भावना का प्रतीकात्मक रूप है। निराला ने अपनी कविताओं में अनेक प्राकृतिक प्रतीकों का प्रयोग किया है। जैसे 'सांध्यवेला' वृद्धावस्था, 'हिमालय शृंग' परमात्मा, 'विषम विषवल्लरी' माया, 'बादल' भय की संहारक तथा नवजीवन का संदेशवाहक आदि प्राकृतिक प्रतीकों का प्रयोग किया है।

छायावादी कवियों में सुमित्रानंदन पंत ने सर्वाधिक प्राकृतिक प्रतीकों एवं अलंकारों का प्रयोग अपनी कविताओं में किया। प्राचीन काल से ही कवियों में प्रकृति के विविध उपकरणों का प्रयोग उपमानों के रूप में करने की प्रवृत्ति रही है। पंत ने अपनी कविता में चमत्कार उत्पन्न करने के लिए प्रकृति के विभिन्न उपकरणों को उपमान के रूप में प्रस्तुत किया है। 'परिवर्तन' कविता प्रतीकों एवं उपमानों का भंडार है। सांगरूपक का उदाहरण प्रस्तुत है—

"अहे वासुकि सहस्र फण!
लक्ष अलक्षित चरण तुम्हारे चिह्न निरंतर
छोड़ रहे हैं जग के विक्षत वक्ष-स्थल पर,
शत-शत फेनोच्छ्वसित स्फीत फूत्कार भयंकर,
घुमा रहे हैं घनाकार जगती का अंबर,
मृत्यु तुम्हारा गरल दंत-कुंचक-कलपांतर
अखिल विश्व की विपर्यय, वक्र कुंडल दिग्मंडल।"[24]

इसके अतिरिक्त पंत ने उत्प्रेक्षा, रूपक, मानवीकरण, अन्योक्ति, विरोधाभास आदि अलंकारों का प्रयोग भी खुलकर किया है।

जयशंकर प्रसाद ने 'कामायनी' में प्रकृति के प्रतीकात्मक रूप का चित्रण अनेक स्थानों पर किया है। प्रसाद ने प्रतीकों का प्रयोग करते हुए सजीव वर्णन प्रस्तुत किया है। काम सर्ग के प्रारंभ का वसंत-वर्णन पूर्णतया यौवन के प्रतीक रूप में चित्रित हुआ है। उसमें किशोरावस्था की समाप्ति के लिए 'रजनी का पिछला पहर', रूप-सौंदर्य के लिए 'कोकिल', प्रेम की उमंगों के लिए 'कलियाँ', संकेत-स्थलों के लिए 'कोरक-कोना', भाव-प्रवाह के लिए 'काकली' आदि का प्रयोग किया है—

"मधुमय वसंत जीवन-वन के
बह अंतरिक्ष की लहरों में,
कब आए थे तुम चुपके से
रजनी के पिछले पहरों में।"[25]

दूती रूप में प्रकृति-चित्रण:

संस्कृत एवं हिंदी साहित्य में प्रकृति को दूत बनाकर उसके माध्यम से संदेश भेजने की परंपरा प्राचीन रही है। सूफी कवि जायसी के 'पद्मावत' में नागमती 'परेवा' द्वारा अपना संदेश भेजती है। कवि कालिदास के 'मेघदूत' में यक्ष बादल को दूत बनाकर अपनी प्रिया को संदेश भेजता है। हरिऔध के 'प्रिय प्रवास' में राधा पवन से दूत का कार्य लेती है। मैथिलीशरण गुप्त की यशोधरा नदी के द्वारा अपना संदेश भेजती है।

छायावादी कवियों ने भी प्रकृति का दूत या दूती के रूप में चित्रण किया है। कवि पंत ने बादल का प्रयोग दूत के रूप में किया है। पंत लिखते हैं कि दमयंती के समान ये बादल कुमुद-कला को संदेश देने के लिए सुनहरे हंस का रूप धारण कर लेते हैं और उसे प्रिय का सुंदर संदेश देकर दूत का कार्य संपन्न करते हैं—

"दमयंती-सी कुमुद कला के
रजत करों में फिर अभिराम
स्वर्ण हंस-से हम मृदु ध्वनि कर,
कहते प्रिय संदेश ललाम।"[26]

प्रसाद के 'कामायनी' में प्रकृति को स्पष्ट रूप से दूती रूप में चित्रित नहीं किया गया है। किंतु इसका हल्का-सा आभास आशा सर्ग में रजनी को दूती के रूप में चित्रित करने का प्रयास हुआ है।

निष्कर्ष:

निष्कर्ष रूप में कह सकते हैं कि प्रकृति-सौंदर्य का चित्रण करते हुए प्रकृति के प्रति एक असीम श्रद्धा और विश्वास की भावना छायावादी काव्य में दिखाई देती है। भले ही अठारह वर्ष की आयु में छायावाद का अंत हो गया हो, पर उसने हिंदी काव्य को जो जीवन-सौंदर्य, प्रकृति-सौंदर्य और नया मानवीय दृष्टिकोण दिया है, वह उसे आधुनिक काल का स्वर्ण युग सिद्ध करने के लिए पर्याप्त है। डॉ. नगेंद्र का कथन है, "इस कविता का गौरव अक्षय है। इसकी समृद्धि की समता केवल भक्तिकाल ही कर सकता है।"[27]

छायावादी काव्य में अभिव्यक्त प्रकृति का मार्मिक वर्णन 21वीं सदी में तंत्रज्ञान की छाया में संवेदनहीन बने मानव समाज में मानवीय संवेदनाओं को जागृत करने हेतु प्रासंगिक है। वर्तमान मनुष्य सहजीवन भूल गया है, प्रकृति का असीम दोहन कर रहा है। परिणामतः कोरोना जैसी महामारी के चपेट में आ चुका है। स्वार्थी, लालची मानव को 'जीवो जीवस्य जीवनम्' का बोध कराने की दृष्टि से छायावादी कविता में अभिव्यक्त प्रकृति-चित्रण महत्वपूर्ण है। वर्तमान यंत्र युग में यंत्र बने मानव को पुनः इंसानी भावों में लौटाने का महत्वपूर्ण कार्य छायावादी काव्य द्वारा संभव है, क्योंकि छायावादी कविता में भाव-संप्रकता प्रचुर मात्रा में विद्यमान है।

संदर्भ ग्रंथ:

1. छायावाद — नामवर सिंह, पृ.-क्र. 33
2. ग्राम्या — सुमित्रानंदन पंत, https://kavitakosh.org
3. प्रसाद ग्रंथावली — प्रथम खंड, कामायनी (चिंता सर्ग), जयशंकर प्रसाद, पृ. 413

4. निराला के काव्य का समीक्षात्मक अध्ययन — मेजर डॉ. नारायण राउत, पृ. 146
5. महादेवी साहित्य : एक नया दृष्टिकोण — पद्मसिंह चौधरी, पृ. 127
6. निराला के काव्य का समीक्षात्मक अध्ययन — मेजर डॉ. नारायण राउत, पृ. 215
7. संध्या (युगपथ) — सुमित्रानंदन पंत ग्रंथावली भाग-2, सुमित्रानंदन पंत, पृ. 23
8. प्रसाद का संपूर्ण काव्य — संपादक डॉ. सत्यप्रकाश मिश्र, पृ. 57
9. यामा — महादेवी वर्मा, पृ. 734
10. निराला रचनावली : भाग 1 — संपा. नंदकिशोर नवल, तृ. सं., पृ. 41
11. निराला रचनावली : भाग 1 — संपा. नंदकिशोर नवल, तृ. सं., पृ. 405, 406
12. कामायनी (काम सर्ग) — जयशंकर प्रसाद, पृ. 54
13. आधुनिक कवि — महादेवी वर्मा, पृ. 73
14. सुमित्रानंदन पंत रचना संचयन (आँसू) शीर्षक कविता — संपा. कुमार विमल, पृ. 48
15. निराला रचनावली : भाग 1 — संपा. नंदकिशोर नवल, तृ. सं., पृ. 350
16. यामा — महादेवी वर्मा, पृ. 42
17. पल्लव — मधुकरी, सुमित्रानंदन पंत, पृ. 76
18. पल्लव — सुमित्रानंदन पंत, पृ. 85
19. नीहार — महादेवी वर्मा, https://kavitakosh.org
20. निराला रचनावली : भाग 1 — संपा. नंदकिशोर नवल, तृ. सं., पृ. 85
21. यामा — महादेवी वर्मा, पृ. 167
22. यामा — महादेवी वर्मा, पृ. 150
23. निराला के काव्य का समीक्षात्मक अध्ययन — मेजर डॉ. नारायण राउत, पृ. 227, 228
24. पल्लव — परिवर्तन, सुमित्रानंदन पंत, पृ. 150
25. महाकवि प्रसाद — डॉ. गणेश खरे, पृ. 249
26. पल्लव — बादल, सुमित्रानंदन पंत, पृ. 72
27. हिंदी साहित्य का इतिहास : प्रवृत्त्यात्मक अध्ययन — डॉ. जगदीशकुमार प्रजापति, पृ. 326